ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

# गुजराती भाषामां लखायला जैन रासोनी यादी.

( प्र०—मनःसुख वि. कीरतचंद मेहता—मोरबी. )

( १ ) आमां गुजराती भाषामां लखायला रासोनी यादी छे.

( २ ) जे रासोना लेखकोनां नाम तथा लेखनी तारीखो मळी शकी छे, तेनी यादी पण साथे आपी छे; आवा रासो ( तारिखनी यादी वाळा ) लगभग बसो थवा जाय छे.

( ३ ) लेखकनां नाम विनाना रासो पण आमां छे, पण ते बहु थोडा छे.

( ४ ) जे रासोनी मिति मळी शकी नथी ( प्रशस्तिमां ) तेमांना केटलाकनी जुदां जुदां साधनो द्वारा ( आसपास एम ) आनुमानिक मिति मुकी छे, जेना सत्यपणा माटे खात्री आपी शकाय नहि. आवा रासो लगभग सो छे.

( ५ ) आ रासोमांनो केटलोक भागः—

( अ ) गुजरातनो इतिहास नक्की करवामां,

( ब ) गुजराती भाषाना अवतार—विकास—वृद्धिना शोधनमां,

( क ) प्राचीन गुजरातीना नमुना माटे,

( ड ) हालनी संस्कारी गुजराती भाषामां अपरिचित नवा पण उपयोगी शब्दोनुं भंडोळ ( Enriching ) वधारवामां, अने

( फ ) गुजराती गद्य—पद्य लखवानी शरुआत जैन लेखकोए के बीजाए करी ए नक्की करवामां उपयोगी थाय एम छे.

( ६ ) श्री हीरविजय सूरि, श्री विजयतिलक सूरि आदिना रासोथी जैन आचार्योनां चरित्र—इतिहास उपर प्रकाश पडी शके एम छे.

( ७ ) रासोना म्होटा भागने छेडे प्रशस्ति आपेली छे; तेमां प्रायःत्रण चार पेढीनां नाम छे; जेथी जैन साधुओना वंश—वृक्ष नक्की करी शकाय एम छे. जुदा जुदा गच्छोनी पट्टावलिओमां तो श्री सुधर्मास्वामीथी पट्टावलि लखाई त्यां सुधीना ते ते गच्छना पट्टाधीश आचार्योनांज नाम—तिथि छे, त्यारे आ रासोनी प्रशस्ति उपरथी बीजा

ক৷ .ुओनां नाम-तिथि-वंश नक्की थई शके एम छे; जे आ दिशाए काम करनार इतिहासकारने उपयोगी थवा योग्य छे.

( ८ ) बधा रासोनो अंतिमहेतु (आंतर् हार्द) धर्म उपदेशनो छे; दान-शिल-तप-भाव-मुख्य व्यवहार-धर्म उपदेशवानो छे. अमुक अमुक नायकनां चरित्रगुंथनरुपे दाखला दृष्टांत-द्वाराए लेखकोए ए उपदेशने बहु रसमय अने आकर्षक कर्यो छे.

( ९ ) ए रासोमांथी सद्बोधक टुचका रसिक सुबोधयुक्त काव्यकणिकाओ जुदां तारवी शकाय एम छे; अने एवां जुदां तारवी काढेलां काव्यकणोने गुजराती भाषाना " रत्नभाडागार " नाम पुस्तकरूपे योजी शकाय एम छे.

( १० ) केटलाक रासोमांथी लेखकोनां बुद्धिवैभव, काव्यचमत्कृति अने अलंकार युक्तवाणी जोई सहृदय वांचकने आनंद मळे एम छे.

( ११ ) ए रासो उपरथी ए रासोना वस्तु-पात्रने अनुसरी, ए रासोनो शुद्धधर्म उपदेशरूप अंतिमहेतु लक्षमां राखी, वर्तमान शैलिए शुद्ध संस्कारी भाषामां कोई शिष्ट लेखक नवलकथा लखे, तो सद्धर्मनी तथा गुजराती भाषाथी व्यवहरनारनी जबरी सेवा बजावाय एम छे; मोटी निर्जरा तथा पुण्यबंधनुं कारण छे.

( १२ ) ध्यानमां राखवानुं छे, के रासोना लेखकोए रासो गुजराती भाषा अथवा काव्य चमत्कार अर्थे नथी लख्या, पण गुजराती भाषानो उपयोग करनाराओने सद्धर्म उपदेशवा अर्थे लख्या छे; एटले क्वचित् क्वचित् भाषाडंबर के काव्यचमत्कृतिविनानी सादी भाषा मालम पडे, तेथी भणेलाओए ( Pedants ) मुखमचकोडवानुं नथी; तेथी ए रासोनी कींमत कांई ओछी नथी थती; सार शोधक सहृदय विद्वानोए तो ए रासोनां आतर् हार्द उपर, अंतिम हेतुरूप सदुपदेश उपर नजर ठेरववानी छे. काव्य चमत्कृतिविनानी सादी भाषामांथी पण जिज्ञासु भाषाशास्त्रीने नवनवुं शिखवानुं मळे एम छे.

( १३ ) आ पण लक्षमां राखवानुं छे, के भाषानी कींमत ते भाषानो उपयोग करनाराने लईने छे; भाषानो उपयोग करनारां न होय तो ते भाषा मृतवत् ( dead ) छे; अने मृतवत् भाषामां गमे तेवां भाषाडंबर-काव्यचमत्कार होय पण ते सामान्य जनसमूहने तो नकामां प्राय छे. श्री सिद्धसेन दिवाकरनी समयने नहिं छाजती संस्कृत भाषा अने श्री वृद्धवादीनी समयोचित सरळ प्राकृत ( प्रकृतजनने man on the spot अनुसरती ) भाषा,—आ बेमांथी कई कारगत ( विजयी ) थई ए वार्त्ता सुप्रसिद्ध छे. आ उपरथी कहेवानुं, के प्रस्तुत रासो कोना अर्थे लखवामां आव्या छे, ते उपर तथा तेमांना उपदेश

उपर दृष्टि राखवामां आवे तो रासोनी कींमत अने उपयोगिता एकदम प्रतीत थशे; भले पछी ते रासोमां वागाडंबर के काव्यालंकार न होय. घणा रासोमां रमणीय—मनोज्ञ वाग्विभव अने काव्यालंकार आदि छे; तथापि बधामां न होय तेथी तेमने प्रेमानंदादिनां काव्यो साथे रसालंकार—वाग्विलास आदिनी सरखामणीमां तरछोडी काढी तेनी गणना न करवामां आवे ए अंगे आ लखवुं छे.

( १४ ) आ पण ध्यानमां राखवानुं छे, के आ रासोना लेखको प्रायः साधु हता; घरबार त्यागी स्वपरहित अर्थे उद्यम करनारा साधु हता; अने एथी ए रासो लखवानो मुख्य हेतु जन—हित तथा सदधर्म सेवा साथे स्वकर्मनी निर्जरानो हतो.

( १५ ) आ रासोमांनो केटलोक भाग ( लगभग ८० रास ) छपाई गयो छे; पण ए मुद्रित थएलामांनो केटलोक भाग एवो अशुद्ध अने चिथरीओ ( shabby and ragged ) छे, के तेने फरी छपाववानी जरूर छे; माटे आ बधा रासोनो समूह गुजराती भाषामां प्रसिद्ध थयेल "**प्राचीन काव्यमाळा**" अथवा "**बृहत्काव्यदोहन**" नी शैलिए "**प्राचीन जैन काव्यमाळा**" अथवा "**जैन काव्यदोहन**" रूपे छपाववामां आवे तो गुजराती साहित्यनुं गौरव वधारनारा संख्याबंध ग्रंथो ( volumes ) थई शके एम छे, एटलुंज नहि पण तेथी सद्धर्म सेवानो, गुजराती साहित्य वृद्धिनो, अने गुजराती साहित्यनो लाभ लेनारां उपर उपकारनो अने परिणामे निर्जरानो महान् लाभ छे.

( १६ ) जैन लेखको तथा अन्य—लेखको वच्चे केवी स्पर्धा चालती, केवां अन्योन्य अनुकरण थतां, तथा केवां लेखचौर्य ( Plagiarism ) अथवा वस्तु—चोरी थतां ए पण कोई कोई रासो उपरथी समजावा योग्य छे.

( १७ ) केटलाक रासो तो एकने एक विषयना होवा छतां जुदी जुदी रीते जुदा जुदा लेखकोए जुदा जुदा लखायला मालम पडशे.

( १८ ) आ रासोनी यादी उपरथी गुजरातीना शतकवार जैन लेखको संबंधी उल्लेख करवानी, निबंध लखवानी सरळता थशे.

( १९ ) आ यादी उपजाववानां साधनोः—

( अ ) इ. स. १९०७ ना सप्टेंबरमां मुंबईमां बीजी गुजराती साहित्य परिषद्मां "**गुजराती साहित्यमां जैन साहित्यनो फाळो**"

ए निबंध वांचेल, तेमां रासोनी एक यादी आपी हती, ते उपरथी;

( ब ) त्यार पछी अत्रे ( मोरबीनो ) पुस्तकनो भंडार जोतां केट-लाक रासोना हस्तलेख जोवामां आव्या हता ते उपरथी;

( क ) तथा त्यारपछी ( सने १९०८ ना आगस्टमां ) जैनधर्म प्रकाश ( श्रावण १९६४ ) ना पु० २४ माना अंक ५ मामां रासोनी एक यादी अपाई हती ते उपरथी, अने

( ड ) त्यारपछी ( सने १९०८ ना सप्टेंबरमां ) सनातन जैनना पु० ४ थाना अं० २ जामां एक यादी आवी हती ते उपरथी, आ यादी करवामां आवी छे.

जैनधर्म प्रकाश तथा सनातन जैनमां आवेली यादीओ प्रायः एकसरखी छे. सनातन जैनमां अमदावादना डेलाना उपाश्रयना भंडारमांनी रासोनी यादी श्रीयुत् केशवलाल प्रेमचंदे आपी छे. जैनधर्मप्रकाशमांनी यादी अक्षरनाक्रममां लेखको अने तेओए रचेला रासो–सज्झाईओ रूपे छे; त्यारे सनातन जैनमांनी यादी अक्षरना क्रममां लेखोनां नाम रूपे छे. पण बंने प्रायः एकसरखी छे. आ बंने यादीमांनो म्होटो भाग बीजी साहित्य परिषद् वखतना निबंधमां अमे आप्यो हतो; उपरांत आ यादीओ-मांथी जे नवो भाग जोवामां आव्यो छे ते अत्रे दाखल कर्यो छे. ( क ) ( ड ) वाळी बंने यादीयोमां सज्झायो–चोपाईओनो समावेश कर्यो छे, ते आ यादीमां नथी लीधो.

( २० ) आ यादीमां आपेला रासो शिवाय पण बीजा घणा रासो हशे; तो जुदां जुदां स्थळोना नाना–म्होटा भंडारोने जोई ते ते स्थळोना सुज्ञ बंधुओ जो ते ते भंडारोमांना रासो आदि अन्य पुस्तकोनी यादी जाहेरपत्रद्वारा आपशे, प्रकट करशे, तो साहित्यनी म्होटी सेवा कर्यानो लाभ मेळवशे, एज विनंति. इतिशम्.

रासोनी उपयोगिता आदिना टुंक अवलोकनरूप आटली सामान्य प्रस्तावना कर्या पछी अक्षरना क्रममां नीचे प्रस्तुत यादी आपुं छुं:—

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| | **अ.** | | |
| *१—१ | अगडदत्त | १५१० आसपास | कल्याणसागर |
| २—२ | ,, | १६२० आसपास | कुशळलाभ |
| ३—३ | ,, | १७०० आसपास | भीम भावसार |
| ४—४ | अजाकुमार | १७६१ आसपास | रुषभकवि (सागर पोरवाडसुत). |
| ५—१ | अभयकुमार † | १७६१ | लक्ष्मीविजय |
| ६—२ | ,, | १६७२ | रुषभदास ( सांगणसुत ) |
| ७—३ | ,, | १६३५ आसपास | सोमविमळ |
| ८— | अमरकुमार | १७५० आसपास | जशविजय |
| ९—१ | अमरसेन अने वज्रसेन | ० | कमळहर्ष |
| १०—२ | ,, | १७५० आसपास | जिनहर्ष |
| ११— | अमरतेज राजा अने धर्मबुद्धि मंत्री | ० | ० |
| १२— | अर्जुनमाळी | १७५० आसपास | जशविजय |
| १३—१ | अर्हन्नकमुनि(अरणिकमुनि) | १७०४ | आनंदसागर ( खर. ) |
| १४—२ | ,, | १७१३ | नयप्रमोद |
| १५—१ | अवंतिसुकुमाल | १७४१ | जिनहर्ष |
| १६—२ | ,, | ११७० | विजयदेवसूरि |
| १७— | अशोकचंद्र अने रोहिणी | १७३० आसपास | ज्ञानविमलसूरि |
| १८—१ | अष्टप्रकारी पूजा † | १६५६ | प्रीतिविमळ |
| १९—२ | ,, | १७७० आसपास | उदयरत्न |
| | **आ.** | | |
| २०— | आनंदमंदिर अथवा श्रीचंद्रकेवली † | १७२९ | ज्ञानविमलसूरि |
| २१—१ | आनंदश्रावक | १७०० आसपास | श्रीसारमुनि |
| २२—२ | ,, | १७७० आसपास | हर्षवाचक शिष्य |
| *२३— | आराधनारास | १४५० आसपास | सोमसुंदर |
| २४— | आर्द्रकुमार | १७२४ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| २५—१ | आषाढभूति | १७२४ | ,, |
| २६—२ | ,, | १६३० आसपास | भावरत्न |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| | **इ.** | | |
| २७—१ | इलाकुमार[एलायचीकुमार] | १७१९ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| २८—२ | ,, † | १८९५ | खूबचंद्र |
| | **उ.** | | |
| २९— | उत्तमचरित्रकुमार † | १७४५ | जिनहर्ष |
| ३०— | उपदेशरास | १६६४ | हीराचंद ( श्रावक ) |
| | **अं.** | | |
| ३१—१ | अंजनासती † | १६६२ | गुणशिल ( खर. ) |
| ३२—२ | ,, | १६८९ | पुण्यसागर |
| ३३—३ | ,, | १७१० आसपास | भुवनकीर्त्ति |
| | **क.** | | |
| ३४— | कनकश्रेष्ठि | १६३० | भावरत्न |
| ३५— | कनकावती अजितसेन | १७५१ | जिनहर्ष |
| ३६— | करकंडु | १६६२ | समयसुंदर |
| ३७— | कर्पूरमंजरी | ० | ० |
| ३८— | कर्मरेख अने भाविनी † | १७२२ | वरिविमळ |
| ३९— | कर्मविपाक [जंबुपृच्छा] † | १७२८ | वीरजीमुनि |
| ४०— | कल्याणविजय गणि | १६८० आसपास | जयविजयगणि |
| ४१— | कान्हड कठियारो † | १७४६ | मानसागर |
| ४२— | कामदेव श्रावक | ० | सोमचंद्र |
| ४३— | कुकडामंजरी | ० | वल्हपंडित |
| ४४— | कुमारमुनि | १६८८ | पुण्यकीर्त्ति ( खर. ) |
| ४५—१ | कुमारपाळ | १६७० | रुषभदास |
| ४६—२ | ,, † | १७४२ | जिनहर्ष |
| *४७— | कुरगडु [ क्रूरघट ] | १५३७ | मतिशेखर |
| *४८— | कूर्मापुत्र | १६ मोसैको पूर्वार्ध | जिनमाणिक्य |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलाना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
| --- | --- | --- | --- |
| ४९— | कुसुमश्री | १७१७ | गंगविजय |
| *५०—१ | कुळध्वज कुमार | १५५० आसपास | उदयसागर |
| ५१—२ | ,, | ० | कक्कमुनि |
| ५२—१ | कृतपुण्य[कयवन्नाशेठ]† | १६७६ | गुणसागर |
| ५३—२ | ,, | १७२१ | धर्ममंदिर |
| ५४— | कोणिकनुं सामैयुं† | १८६४ | वीरविजय |

ख—क्ष.

| | | | |
| --- | --- | --- | --- |
| *५५— | क्षेमप्रकाश | १४१० आसपास | जयानंदसूरि |
| *५६— | क्षेत्रसमास रास | १६ मोसैको पूर्वार्ध | जिनमाणिक्य |

ग—ज्ञ.

| | | | |
| --- | --- | --- | --- |
| ५७—१ | गजसिंहकुमार | ० | देवरत्न |
| ५८—२ | ,, | १७२० आसपास | मानविजय |
| *५९—१ | गजसुकुमार | १५७० आसपास | शुभवर्धनशिष्य |
| ६०—२ | ,, | १७०६ | भुवनकीर्ति |
| ६१—३ | ,, | १७२० आसपास | जिनराजसूरि |
| ६२— | गुणवर्मा† | १७९७ | ज्ञानसागर उपा० |
| *६३—१ | गुणावळी | १५१४ | गजकुशळ |
| ६४—२ | ,, | १७५१ | जिनविजय |
| ६५—३ | ,, गुणकरंड | १७५१ | जिनहर्ष |
| ६६— | गोरावादळ | ० | हेमरत्न |
| *६७—१ | गौतमस्वामी† | १४१२ | उदयवंत ( विजयभद्र ) |
| *६८—२ | ,, | १५७० आसपास | लावण्यसमय |
| *६९—१ | गौतमपृच्छानो रास | १५७० आसपास | ,, |
| ७०—२ | ,, | १६८९ | समयसुंदर |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नामें. |
|---|---|---|---|
| | | च. | |
| ७१— | चारप्रत्येकबुद्ध† | १६६२ | समयसुंदर |
| ७२— | चित्रसंभूति | १७३१ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| * ७३—१ | चित्रसेनपद्मावती | १५२२ | भक्तिविजय ( ? ) |
| ७४—२ | ,, | १७२० | वृद्धिविजय |
| ७५—३ | ,, | ० | विनयसागर |
| ७६—१ | चंदनमलयागिरि † | १७११ | सुमतिहंस उपा० |
| ७७—२ | ,, | १७३६ | अजितचंद्र |
| ७८—३ | ,, | ० | क्षेमहर्ष |
| (२०) | चंद्रकेवली अथवा आनंद-मंदिर † | १७२९ | ज्ञानविमल |
| ७९—१ | चंदराजा † | १९८१ ( ! ) | मोहनविजय ( ! ) |
| ८०—२ | ,, | १७०८ | विद्यारुचि |
| ८१—३ | ,, गुणावळी† | १७५० | दीपविजय |
| ८२—४ | ,, † | १७८३ | मोहनविजय |
| ८३—५ | ,, | ० | मतिसार |
| ८४—६ | ,, | ० | ललितप्रभ |
| ८५— | चंदनबाळा | ० | विनयसागर |
| ८६— | चंदायन | १६०१ | दर्शनकवि |
| ८७— | चंपकश्रेष्ठि† | १६९९ | समयसुंदर |
| *८८— | चंद्रधवळ ने धनदत्त | १४७० आसपास | माणिक्यसुंदर |
| ८९— | चंद्रलेखा | ० | मतिकुशळ |
| ९०— | चंद्रशेखर† | १९०२ | वीरविजय. |
| | | ज. | |
| ९१— | जगडुप्रबंध | १७१६ | केसरकुशळ |
| ९२— | जयविजय | १७३४ | जिनविजय |
| ९३—१ | जयानंद | ० | चान्तकमुनि |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| ९४—२ | जयानंद † | १८५८ | पद्मविजय |
| ९५—१ | जंबुस्वामी | १६७३ | नयविमल |
| ९६—२ | ” | १७३७ | ज्ञानविमलसूरि |
| ९७—३ | ” † | १७३९ | यशोविजय |
| ९८—४ | ” | ० | कुशलविजय |
| ९९—५ | ” | ० | पद्मचंद्र |
| १००—६ | ” | ० | राजपाळमुनि |
| (३९)— | जंबुपृच्छा अथवा कर्म विपाक † | १७२८ | वीरजी |
| १०१— | जितारिराजा | ० | ० |
| | **झ. ढ.** | | |
| १०२— | झांझरियामुनि | १७५६ | भावरत्न (२) पुनमगच्छ |
| १०३— | ढुंढक मतोत्पत्ति | १७७० आसपास | लक्ष्मीविजय |
| १०४— | ढोलामारु | १६१७ | कुशळलाभ |
| १०५— | ढालसागर अथवा हरिवंश † | १६७३ | गुणसागर |
| | **त.** | | |
| १०६— | तेजपाळ | १७६० | रामविजय |
| १०७—१ | तेजसार | १६२४ | कुशळलाभ |
| १०८—२ | ” | १८६० | रामचंद्र |
| *१०९—१ | त्रिविक्रम | १४१५ | जिनोदयसूरि |
| ११०—२ | ” | १६१५ | पद्ममेरु |
| | **द.** | | |
| १११— | दत्त | ० | ० |
| ११२— | देवदत्त | ० | ० |
| ११३— | देवकीना छपुत्र † | ० | परमाणंद |
| ११४—१ | देवराज वच्छराज | ० | लावण्यमुनि |
| ११५—२ | ” | ० | समयरत्नसूरि |
| ११६— | द्रव्यगुणपर्याय † | १७३० आसपास | यशोविजय |
| ११७— | द्रौपदी | ० | कनककीर्त्ति |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

२–७१०–५००

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| | **ध.** | | |
| ११८— | धनदत्त राजा | १७९६ | महीमावर्धन |
| *११९—१ | धन्ना चरित्र | १५१४ | मतिशेखर |
| १२०—२ | ,, | १६८८ | पुण्यकीर्त्ति |
| १२१—३ | ,, | १७२७ | जिनविजय |
| १२२—४ | ,, † | १७२७ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| १२३—५ | ,, | ० | जयवल्लभ |
| *१२४—६ | ,, | १५१५ आसपास | जिनवर्धन |
| १२५—७ | ,, कुमार | ० | हर्षसागर |
| १२६—८ | ,, शालिभद्र | ० | कल्याण |
| १२७—१ | धम्मिल कुमार | १७१५ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| १२८—२ | ,, | १६३० आसपास | सोमविमल |
| १२९—३ | ,, † | १८९६ | वीरविजय |
| १३०—१ | धर्मपरीक्षा † | १८२१ | नेमविजय |
| १३१—२ | ,, † | १८६० | रूपविजय |
| १३२— | धर्म बुद्धिमंत्री अने पापबुद्धिराजा † | १७६८ | उदयरत्न |
| १३३— | धर्मबुद्धि | १७४२ | लाभवर्धन |
| १३४— | धर्मी पापी | ० | चारुदत्त |
| १३५— | ध्यानामृत रास | ० | विनयचंद्र |
| १३६— | ध्यानमाला (पंचपरमेष्टि) | १७६६ | नेमिदास श्रावक |
| | **न.** | | |
| १३७— | नमिराजर्षि | १६६२ | समयसुंदर |
| १३८— | नयचक्र रास | १७२६ | पं. हेमराजजी |
| १३९— | नयप्रकाश | १६७३ | पुण्यसागर |
| १४०— | नयविचार | १७२० आसपास | मानविजयगणि |
| १४१—१ | नर्मदा सुंदरी | १६७८ | कम्मशी ( कर्मसिंह ) |
| १४२—२ | ,, † | १७५४ | मोहनविजय |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|---|
| १४३—१ | नळचरित्र | | १६४० आसपास | नयसुंदर |
| १४४—२ | ,, | दमयंती | १६८६ | समयसुंदर |
| *१४५—३ | ,, | ,, | १५२० आसपास | मेघराज |
| १४६—४ | ,, | नळायन | १७१० आसपास | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |
| १४७—१ | नवकार रास | | १७४५ आसपास | धर्ममंदिर |
| १४८—२ | ,, | | १७५५ | गोडीदास |
| १४९—३ | ,, | | १७७० आसपास | उदयरत्न |
| १५०—१ | नवतत्त्व रास | | १६५० आसपास | ऋषभदास |
| १५१—२ | ,, | | ० | भावसागर |
| १५२—३ | ,, | | ० | सौभाग्यसुंदर |
| १५३—१ | नेमरासो† | | १८१९ | अमीविजय |
| १५४—२ | ,, | नेमिनाथ † | १८२० | पद्मविजय |
| १५५—३ | | ,, | ११७५ आसपास | विजयदेवसूरि |
| १५६—४ | ,, | ,, | १६४० आसपास | पुण्यरत्न |
| १५७— | नंदिषेण मुनि | | १७१८ | ज्ञानसागर ( वि. प. ) |

प.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५८— | पद्मरास | ० | विनयसागर |
| १५९— | पद्मिनीसती | ० | लब्धोदय मुनि |
| १६०— | पुण्यपापरास | ० | हर्षमुनि |
| १६१— | पुण्यपाळ | ० | रामदास |
| १६२— | पुण्याढ्य† | १६८० आसपास | समयसुंदर |
| १६३— | पृथ्वीचंद्र-गुणसागर † | १८०७ | लब्धिविजय |
| १६४—१ | पंचाख्यान | ० | यशोधर |
| १६५—२ | ,, | ० | सौभाग्यविमळ |
| १६६—१ | प्रत्येक बुद्ध † | १६६२ | समयसुंदर |
| १६७—२ | ,, | ० | तीर्थकुशळ |
| १६८— | प्रतापसिंह बाबु† | १९११ | साध्वी ऋद्धिश्री |
| १६९— | प्रद्युम्न | ० | देवचंद्र |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| १७०—१ | प्रदेशी राजा | ० | ज्ञानचंद्र |
| १७१—२ | ,, † | १७८० आसपास | ज्ञानसागर उपा० |
| १७२—३ | ,, | १५८० ,, | सहजसुंदर |
| १७३— | प्रभावती | १६४० आसपास | नयसुंदर |
| १७४— | प्रतिभा | १६८० आसपास | समयसुंदर |
| १७५— | प्रियमेलक | १६७२ | ,, |
| १७६— | प्रेमलालच्छी † | १६८९ | दर्शविजय |

**ब.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १७७— | बारकषाय | १८३५ | कांतिविजय ( २ ) |
| १७८—१ | बार भावना † | १६३२ | जयसोम |
| १७९—२ | ,, † | १६८५ | सकळचंद्रजी |
| १८०— | बारव्रत | १६८५ आसपास | समयसुंदर |
| १८१— | बुद्धिरास | ० | शालिभद्र |
| *१८२— | बोहानोरास | १५६० आसपास | लावण्यसमय |

**भ.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १८३— | भरडक बत्रिशीरास | ० | हरजी |
| *१८४—१ | भरतबाहुबळीरास | पंदरमो सैको | तेजवर्धन |
| *१८५—२ | ,, | १४१० आसपास | गुणरत्नसूरि |
| १८६—३ | ,, | १६८० आसपास | ऋषभदास |
| १८७—४ | ,, | ० | जिनसाधु |
| १८८— | भरत विष्णुकुमार | ० | नंदलाल |
| १८९— | भुवनानंद सती | ० | सुमतिधर्म |
| १९०— | भुवनभानु केवली † | १७६९ | उदयरत्न |
| १९१—१ | भोज | १७२९ | कुशलधीर |
| १९२—२ | ,, कुमार | ० | हेमाणंद |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

म.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकर्ना नाम. |
|---|---|---|---|
| १९३—१ | मदनकुमार | ० | दयासागर |
| १९४—२ | „ राजर्षि | ० | दामोदर मुनि |
| *१९५—१ | मदनरेखा ( मयणरेहा ) † | १४१३ | हरसेवक |
| *१९६—२ | „ | १५३७ | मतिशेखर |
| १९७—३ | „ | ० | विनयचंद्र |
| १९८—१ | महाबलमलयसुंदरी † | १७५१ | जिनहर्ष |
| १९९—२ | „ | १७७५ | कांतिविजय |
| २००—३ | „ | ० | विजयगणि |
| २०१— | महीपति राजा अने मतिसागर मंत्री | १७७० आसपास | उदयरत्न |
| २०२— | महीपाळ | ० | अमीपाळ |
| २०३— | मुनिपति † | १७२९ | धर्ममंदिर |
| २०४—१ | मृगांकलेखा | १८३८ | रायचंद्र |
| २०५—२ | „ | ० | वच्छ |
| २०६—१ | मृगावती | १६६८ | समयसुंदर |
| २०७—२ | „ | १६८० आसपास | सकळचंद्र |
| २०८—३ | „ | १६८९ | चंद्रकीर्त्ति |
| २०९— | मानतुंगमानवती † | १७६० | मोहनविजय |
| २१०— | मेघवाहन | ० | नयकलश |
| २११— | मोहविवेक † | १७४१ | धर्ममंदिर |
| २१२—१ | मंगळकलशकुमार † | १७४९ | दीपविजय |
| २१३—२ | „ | ० | राजविजय |

य.

| | | | |
|---|---|---|---|
| २१४— | यमलकरास | १६८१ आसपास | समयसुंदर |
| २१५—१ | यशोधररास † | १७६६ | शिवरत्न |
| २१६—२ | „ | १७६६ आसपास | उदयरत्न |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| | र. | | |
| २१७— | रणसिंहराजर्षि | १७४० आसपास | ज्ञानविमळसूरि |
| २१८— | रत्नकुमार | ० | विजयशेखर |
| *२१९—१ | रत्नचूड | १५१० आसपास | रत्नशेखर |
| २२०—२ | „ मणिचूड† | १७५१ | रत्नसिंहसूरि |
| २२१—३ | रत्नचूडव्यवहारियो † | १७२४ | कनकनिधान |
| २२२—१ | रत्नपाळ † | १८९० | मोहनविजय |
| २२३—२ | „ | १६६९ आसपास | सुरविजय |
| २२४—१ | रत्नसार कुमार | १५८२ | सहजसुंदर |
| २२५—२ | „ | ० | देवचंद्र |
| २२६— | राजसिंह | ० | यशोनंद |
| २२७— | रात्रिभोजन परिहार † | १७५९ | जिनहर्ष |
| २२८— | रामकृष्ण | ० | लावण्यकीर्ति |
| २२९— | रूपचंद्र | १६४५ आसपास | नयसुंदर |
| *२३०—१ | ऋषिदत्ता | १५६९ | देवकुलसिंह |
| २३१—२ | „ | १६४३ | गुणसौभाग्य |
| २३२—३ | „ | १७१० आसपास | जयवंतसूरि |
| २३३— | रोहिणी | १७२० आसपास | ऋद्धिविजय |
| *२३४— | रोहिणीयो चोर | पंदरमोसैको | देपाल |
| | ल. | | |
| २३५— | लीलावती ( विक्रम पत्नी ) | १७२४ | मानविजय |
| २३६—१ | लीलावती सुमति विलास † | १७६७ | उदयरत्न |
| २३७—२ | „ | १७४१ | लाभवर्द्धन |
| २३८—३ | „ | १७३० आसपास | कुशलधीर उ० |
| २३९—४ | „ | ० | कडुवो |
| २४०—५ | „ | ० | प्रेमजी |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

## व.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| *२४१— | वज्रस्वामी | १५६३ | धर्मदेवगणि |
| २४२— | वत्सराज | १७९८ | नेमविजय |
| *२४३— | वसुदेव | १५९७ | हर्षकुशल |
| २४४—१ | वस्तुपाळ-तेजपाळ | १५९७ | पार्श्वचंद्र |
| २४५—२ | ,, | १६८२ | समयसुंदर |
| २४६—३ | ,, † | १७२१ | मेरुविजय |
| २४७—१ | विक्रम | ० | हीरानंद |
| २४८—२ | ,, ,, आदित्य | ० | कर्णविजय |
| २४९—३ | ,, ,, पंचदंड | १७५० आसपास | भाणविजय |
| २५०—४ | ,, ,, ,, | १७४० आसपास | लक्ष्मीवल्लभ |
| २५१—५ | ,, ,, ,, | १७४० | लाभवर्द्धन |
| २५२—१ | विक्रमसेन | १७२४ | प्रेमसागर |
| २५३—२ | ,, | ० | उदयभानु |
| २५४— | विचार मंजरी | १६७३ | गुणविमळ |
| २५५—१ | विद्याविलास राजा | ० | रूपसागर |
| २५६—२ | ,, | ० | हीरानंद |
| २५७—३ | ,, | १७६० आसपास | जिनहर्ष |
| २५८—१ | विमलमंत्री | १७३० आसपास | रूपविजय |
| *२५९—२ | ,, | १५६८ | लावण्यसमय |
| २६०— | विमळा सती | १७९० आसपास | भावप्रभसूरि |
| २६१— | विल्हणपंचाशिका | ० | सारंगकवि |
| २६२— | विनोदविलास | १७६० आसपास | उदयरत्न |
| २६३—१ | विशस्थानक | १६८५ आसपास | रुषभदास |
| २६४—२ | ,, † | १७४८ | जिनहर्ष |
| २६५— | विजयतिलक सूरि | १६०५ | संघविजय |
| २६६— | वीरभाण उदयभाण | ० | केशवदास |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. ( चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| २६७— | व्यापारी रास † | १७१९ | जिनदास श्रावक |
| २६८—१ | वंकचूळ | ० | ज्ञानविजय |
| २६९—२ | ,, | ० | भवान |
| | **श.** | | |
| २७०—१ | शत्रुंजय तीर्थमाळा † | १८४० | अमृतविजय |
| २७१—२ | ,, ,, उद्धार | १७१९ | उदयरत्न |
| २७२—३ | ,, ,, | १७५५ | जिनहर्ष |
| २७३—४ | ,, ,, | १६८६ | समयसुंदर |
| २७४—५ | ,, ,, उद्धार | ११३८ | नयसुंदर |
| *२७५— | शांतरस | १४६० आसपास | मुनिसुंदर |
| २७६—१ | शांतिनाथ | १७२० | ज्ञानसागर ( वि. प.) |
| २७७—२ | ,, | १७८५ | रामविजय |
| २७८—३ | ,, | १६३० आसपास | हीरसूरि |
| २७९—१ | शांबप्रद्युम्न | ११२० आसपास | जिनचंद्र |
| २८०—२ | ,, | १७८० आसपास | ज्ञानसागरउपा० |
| २८१—३ | ,, | १८१८ | मयाराम |
| २८२—४ | ,, | १६५९ | समयसुंदर |
| २८३—१ | शालिभद्र | १७२० आसपास | जिनसिंहसूरिशिष्य |
| २८४—२ | ,,† | १६३८ | मतिसागर |
| २८५—३ | ,, | १६७८ | ,, |
| २८६— | शिलरत्न | ० | कुशलविजय |
| *२८७— | शिळरास | १४११ | विजयभद्र |
| २८८—४ | शिळवती† | १७०० | नेमविजय |
| २८९— | शिलकुमार | ० | धर्मसिंह मुनि |
| २९०—१ | श्रीपाळ | ० | उदयविजय |
| २९१—२ | ,, | १७४० | जिनहर्ष |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| *२९२—३ | श्रीपाळ | १५३१ | ज्ञानसागर ( गुणदेव शिष्य ) |
| २९३—४ | ,, | १७८५ आसपास | ज्ञानसागर उपा० |
| २९४—५ | ,, | १७२९ आसपास | भुवनकीर्त्ति शिष्य |
| *२९५—६ | ,, | १५५७ | लब्धिसागर |
| २९६—७ | ,, | ० | माणिक्यसागर |
| २९७—८ | ,, | १७२० आसपास | मेरुविजय |
| २९८—९ | ,, † | १७३८ | यशोविजय तथा विनयविजय |
| २९९—१० | ,, | ० | सिंहरत्नशेखर |
| ३००—१ | श्रेणिकरास | ११७५ आसपास | रुषभदास |
| ३०१—२ | ,, | १७०० आसपास | भीमभावसार |
| ३०२—३ | ,, | १६३० आसपास | समरचंद्र |
| ३०३—४ | ,, (सम्यकत्वसार) † | १६३२ | सोमविमळ |

ष. स.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३०४— | षट साधु | ० | धर्मसिंहमुनि |
| ३०५—१ | सनत्कुमार | १६३७ | पुण्यरत्न |
| ३०६—२ | ,, | १७३७ | ज्ञानसागर ( वि. प.) |
| ३०७— | समरादित्य † | १८४२ | पद्मविजय |
| ३०८—१ | सम्यक्त्व कौमुदीनो रास | ,, आसपास | ,, |
| ३०९—२ | ,, | ० | वत्सराज |
| (३०३) | सम्यक्त्वसार श्रेणिक † | १६३२ | सोमविमळ |
| ३१०— | सागरदत्त | १६०० आसपास | हीरमुनि |
| ३११— | सातव्यसन | ० | रत्नसुंदर |
| ३१२— | साधुगुणमाळा | १५८० आसपास | सहजसुंदर |
| *३१३— | सारशीखामण | १५४८ | जयसुंदरशिष्य |
| *३१४— | सिद्धचक्ररास | १५२१ | ज्ञानसागर ( गुणदेवशिष्य ) |
| ३१५— | सिद्धाचळ रास | १८५० आसपास | पद्मविजय |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. ( चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर. | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकोनां नाम. |
|---|---|---|---|
| *३१६— | सिंहासनबत्रीशी | १५३६ | हीरकळश |
| ३१७— | सीता | १६८५ आसपास | बाळकवि |
| ३१८— | सुडासाहेली | १५८५ आसपास | सहजसुंदर |
| *३१९—१ | सुदर्शन शेठ | १५६० आसपास | क्षमाकल्याण |
| *३२०—२ | ,, | १५०१ | मुनिसुंदरशिष्य |
| ३२१—३ | ,, | १७४५ आसपास | जिनहर्ष |
| ३२२— | सुमतिनागिल † | १६१२ | ब्रह्मर्षि |
| ३२३—१ | सुमित्रकुमार | १६६८ | रुषभकवि |
| ३२४—२ | ,, | १६५० आसपास | विजयसेनसूरि |
| ३२५—३ | ,, | १६७० आसपास | रुषभदास |
| ३२६—४ | ,, राजर्षि | १५६७ | धर्मसागर |
| ३२७— | सुभद्रा रास | १७९७ | भावप्रभसूरि |
| ३२८— | सुरनृप रास | ० | शिलंधर मुनि |
| *३२९— | सुरप्रियकेवली | १५६७ | लावण्यसमय |
| ३३०— | सुरपाळ | १६९७ | विवेकचंद्र |
| ३३१—१ | सुरसुंदरी | १७४० | आनंदसूरि |
| ३३२—२ | ,, | ० | धर्मसिंह |
| ३३३—३ | ,, | १६४४ | नयसुंदर |
| ३३४—४ | ,, | १९०० आसपास | वीरविजय |
| ३३५— | सुरसेन | ० | हंसमुनि |
| ३३६— | सुलसा | ० | कल्याणविमळ |
| ३३७— | सूदयवत्स (सदेवंत) अने सावलिंगा | १६९७ | कीर्त्तिवर्धन |
| ३३८— | सूर्ययशा | १७७० आसपास | उदयरत्न |
| *३३९— | सोळसती | १५२० आसपास | मेघराज |
| ३४०— | सुसढ | १६८० आसपास | समयसुंदर |
| ३४१— | संघयणी रास | १६७५ | मतिसागर |

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| ३४२—१ | स्थूलिभद्र | १६१८ | ऋषभदास |
| ३४३—२ | ,, | १५७५ आसपास | सहजसुंदर |
| ३४४—३ | ,, | १७४९ | उदयरत्न |
| ३४५—४ | ,, शिलवेल † | १८११ | शुभविजय |

ह.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| ३४६—१ | हरिबळ | ० | कुशलसमय |
| ३४७—२ | ,, | १८१० | जिनविजय |
| ३४८—३ | ,, † | १८१० | लब्धिविजय |
| ३४९—१ | हरिवाहन | १७५० आसपास | मोहनविजय |
| ३५०—२ | ,, | १७३० आसपास | रुपविजय |
| ३५१— | हरिवंश चरित्र | १७१८ | आनंदमुनि |
| (१०५) | हरिवंश अथवा ढाळसागर† | १६७३ | गुणसागर |
| ३५२—१ | हरिश्चंद्र † | १६९७ | कनकसुंदर |
| *३५३—२ | ,, | १५५४ | धर्मदेवगणि(सौभाग्यरत्नशिष्य) |
| ३५४—३ | ,, | १८५८ | प्रेममुनि |
| ३५५—४ | ,, | १८१० आसपास | लब्धिविजय |
| ३५६— | हरिषेण श्रीषेण | १६५० आसपास | धनविजय |
| ३५७—१ | हितशिक्षा † | १६८२ | रुषभदास |
| ३५८—२ | ,, प्रबुद्धरास | ० | शालिभद्र |
| ३५९—१ | हीरविजय सूरि | १७३६ | ० |
| *३६०—२ | ,, | ० | भक्तिविजय (?) |
| ३६१—३ | ,, | १६८० आसपास | रुषभदास |

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.

| नंबर | रासोनां नाम. | वि. सं. साल. | लेखकनां नाम. |
|---|---|---|---|
| *३६२—१ | हंसराज वच्छराज | १४११ | विजयभद्र |
| ३६३—२ | ,, † | १६८० | जिनोदयसूरि |

टीपः—चार पांच सैकाना जुना रासो लगभग ४५ छे.

ॐ शांतिः

ली. मनःसुख वि. कीरत्‌चंद मेहता,
मोरबी.
ता. १८—७—०९ रवि.

---

* आवी निशानीवाळा रासो बहु जुना लखायला छे. (चारसो पांचसो वरस पहेलांना.)

† आवी निशानीवाळा रासो मुद्रित छे.